अग्निवंशवर्णन

देवेन्द्र सिंह मौचाल
जोधपुर

अग्निआदि देव के रूप में सुप्रतिष्ठित हैं। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि वेदवाङ् मय में सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद में सर्वप्रथम अग्नि की ही स्तुति की गयी है। अग्नि क्षत्रिय वर्ण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसा कि बृहज्जाबालोपनिषद् में उल्लिखित है, अग्नि के स्वरूप एवं शारीरिक वैशिष्ट्य के वर्णन से स्पष्ट परिज्ञात होता हैः-

''अग्निराख्यायते रौद्री घोरा या तैजसी तनूः।
शक्तिः सोमोऽमृतमयो रसशक्तिकरी तनूः।।
वैद्युतादिमयं तेजो मधुरादिमयो रसः।
तेजोरसविभेदैस्तु वृत्तमेतच्चराचरम्।।''

(बृहज्जाबालोपनिषद्-2-1/45)

अग्नि कौन थे ? इनका वंश किससे प्रारम्भ हुआ ? अग्निवंश के नाम से वंश का आरम्भ एवं विस्तार कब और कैसे हुआ ? इत्यादि प्रश्न पौराणिक ऐतिह्यसन्दर्भों के अवलोकन की जिज्ञासा को सहज उद्बुद्ध करते हैं।

वैदिक मान्यता के अनुसार वैश्वानर अग्निवंश के आदिपुरुष थे, जिन्हें ही कालान्तर में अग्नि के पर्याय के रूप में प्रचलित कर दिया गया। वैश्वानर की राजधानी हाटकपुर थी। इन वैश्वानर के दो पुत्रियाँ तथा एक पुत्र थे। मत्स्यपुराण में वैश्वानर की पुत्रियों का वर्णन निम्नानुसार प्राप्त होता हैः-

''पुलोमा कालका चैव वैश्वानरसुते हि ते।
बह्वपत्ये महासत्त्वे मारीचाख्यपरिग्रहे।।

पौलोमान् कालकेयाँश्च मारीचोऽजनयत्पुरा।
अवध्या येऽमराणां वै हिरण्यपुरवासिनः।।''

अर्थात् वैश्वानर की दो पुत्रियाँ पुलोमा एवं कालका बहुत पुत्रों वाली एवं बहुत बलशालिनी थीं। उनका विवाह मारीच के साथ हुआ था। मारीच से उनके जो पुत्र हुए वे क्रमशः पौलोम और कालकेय नाम से प्रसिद्ध हुए। ये देवताओं के लिए भी अवध्य थे तथा ये हिरण्यपुर में निवास करते थे। कालकेयों का वर्णन नन्दिपुराण में भी प्राप्त होता है। उन्होंने नान्दीमुखों से युद्ध किया था।

वैश्वानर के पुत्र विभावसु थे, जिनका अपर नाम जातवेदा था। इन जातवेदा द्वारा वैश्वानरवंश का विस्तार किया गया।

पौराणिक मान्यता के अनुसार ब्रह्मा (प्रजापति) के पुत्र मरीचि, भृगु एवं अंगिरा अग्निवंश का संवर्धन करने वाले थे। मरीचि के पुत्रों में अग्निष्वात्त नामक पितर ज्येष्ठ थे, जिनसे देवों एवं देवानुयायी यज्ञप्रवर्तक द्विजों का विस्तार हुआ। इनका उल्लेख मनुस्मृति में निम्नानुसार प्राप्त होता हैः-

''अग्निष्वात्ताश्च देवानां मारीचा लोकविश्रुताः।। (मनुस्मृति-3/125)

मरीचि के बाद ब्रह्मा के दूसरे पुत्र थे अंगिरा तथा अंगिरा के पुत्र थे हविर्भुज्। ये भी पितर थे। इनसे क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई। जैसा कि मनुस्मृति में भी कहा गया हैः-

''क्षत्रियाणां हविर्भुजः।'' (मनुस्मृति - 3/127)

अंगिरा के चार कन्यायें भी थी - सिनीवाली, कुहू, राका एवं अनुमति।

इनका वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में निम्नानुसार उपलब्ध होता है।

''श्रद्धा त्वङ्गिरसः पत्नी चतस्त्रोऽसूत कन्यका।
सिनीवाली कुहू राका चतुर्थ्यनुमतिस्तथा।।'' (श्रीमद्भगावत-4/1/34)

अंगिरा के छोटे भाई भृगु थे, जिन्होंने अग्निवंश की एक अन्य शाखा भृगुवंश को जन्म दिया। परशुराम भृगुवंश में ही उत्पन्न हुए थे। भृगु के पुत्र शुक्राचार्य थे, जो असुरों के गुरु माने जाते रहे हैं। अंगिरा के पुत्र बृहस्पति थे, जो

देवताओं के गुरु माने जाते रहे। बृहस्पति का पुत्र कच था जिसने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया था। कच एवं देवयानी का आख्यान पुराणों में अनेकत्र उपलब्ध होता है तथा वहाँ सम्पूर्ण पृष्ठभूमि अग्निवंश की ही वर्णित प्राप्त होती है।

पुराणवाङ्मय के समालोचकों ने उक्त प्रमाणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है, कि मरीचि के पुत्रों ने देवों में क्षत्रियत्व को प्रतिष्ठापित किया। यही कारण है कि देव सदैव अस्त्रशस्त्रधारी रहे हैं तथा असुरों के विनाश हेतु तत्पर रहने वाले वर्णित किये गये हैं। भृगु एवं अंगिरा के पुत्रों ने मनुष्यों में क्षत्रियत्व को प्रतिष्ठापित किया।

यदि मानवीय क्षत्रियवंशों का क्रमनिर्धारण किया जाये, तो सभी वंशों से अग्निवंश की प्राचीनता परिलक्षित होती है, क्योंकि सूर्यवंश भी मरीचि के ही पौत्र विवस्वान् से प्रारम्भ होता है। अन्य क्षत्रियवंशों से इसका सम्बन्ध भी मानुष्यक आधार पर विस्तार को प्राप्त करता रहा। मानुष्यक क्षत्रिय वंशों में अग्निवंश के आदिपुरुष अंगिरा हैं, ऐसा पुराणों से स्पष्ट है।

अंगिरा की पत्नी आत्रेयी थी, जो महर्षि अत्रि की पुत्री थी। आत्रेयी ने वाल्मीकि के पास वेदान्त विद्या का अध्ययन किया था। संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार भवभूति ने उत्तररामचरित में आत्रेयी का वाल्मीकि की शिष्या के रूप में वर्णन किया है। अंगिरा से आत्रेयी के तीन पुत्र हुए - आहव, धिष्ण्य एवं गार्हप। ये तीनों अग्निवंश के शाखाप्रवर्तक रहे। अतः अग्निवंश की तीन शाखायें मानी जाती हैं:- आहव शाखा, धिष्ण्य शाखा एवं गार्हप शाखा।

आहव शाखा में कृशानु सर्वाधिक प्रतापी थे। इनके पुत्र का नाम संवर्तक था तथा संवर्तक के पुत्र का नाम प्रतर्दन था। प्रतर्दन की संततियों के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं होती । धिष्ण्य शाखा में प्रवाहण, हुवस्वान्, बम्भारि, कवि, विश्ववेदा, हव्यवाहन, प्रचेता तथा मार्जालीय नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय रहे। इनका वर्णन वेद वाङ् मय में अनेकत्र उपलब्ध होता है।

प्रचेता के दश पुत्र थे, ऐसा महाभारत में उल्लेख हुआ है। प्रचेता का ही दूसरा नाम प्राचीनबर्हिष् भी था। इनकी पत्नी समुद्रकन्या सवर्णा थी। प्रचेता के पुत्रों में दक्ष ने सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त की थी। गार्हप शाखा में अजैकपात् एवं अहिर्बुध्न्य विशेष विख्यात रहे, अतः इन्हें देवों के रूप में ख्याति प्राप्त हुई। नक्षत्रों के अधिदेवता के रूप में ज्योतिषशास्त्र में भी इनका उल्लेख हुआ है।

मरीचि की पत्नी सम्भूति थी, जिससे चार कन्यायें एवं एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। कूर्मपुराण में इनका उल्लेख निम्नानुसार प्राप्त होता है :-

''मरीचेरपि सम्भूतिः पौर्णमाससमूयत।
कन्याचतुष्टयं चैव सर्वलक्षणसंयुतम्।।
तुष्टिर्ज्येष्ठा तथा वृष्टिः कृष्टिश्चापथचितिस्तया।
विरजाः पर्वतश्चैव पौर्णमासस्य तौ सुतौ।।'' (कूर्मपुराण-12/4,5)

अर्थात् मरीचि से सम्भूति ने पौर्णमास नामक पुत्र प्राप्त किया था। तथा चार उत्तम लक्षणों वाली कन्यायें भी प्राप्त की थीं। इन कन्याओं के नाम थे- तुष्टि (ज्येष्टा) वृष्टि, कृष्टि तथा अपचिति। पौर्णमास के दो पुत्र हुए थे। उनके नाम थे विरजा तथा पर्वत।

मरीचि के ही असम्भूति से कश्यप उत्पन्न हुए। कश्यप के दो पत्नियाँ थी दिति एवं अदिति। इनमें अदिति से द्वादश आदित्य उत्पन्न हुए - इन्द्र, धाता, भग, पूषा, मित्र, वरुण, अर्यमा, अर्चि (अंशु), विवस्वान्, त्वष्टा तथा विष्णु एवं प्रजापति। स्वरूप की दृष्टि से सर्वाधिक तेजस्विता का होना इनके क्षत्रियत्व का प्रमाण है। इन द्वादश आदित्यों में विवस्वान् ने अग्निवंश एवं सूर्यवंश का सर्वाधिक विस्तार किया।

इनके विषय में तथा इनकी सन्मति के विषय में मत्स्यपुराण में निम्नांकित उल्लेख प्राप्त होता हैः-

''विवस्वान् कश्यपात् पूर्वमदित्यामभवत्सुतः।
तस्य पत्नीत्रयं तद्वत्संज्ञा राज्ञी प्रभा तथा।।
रैवतस्य सुता राज्ञी रेवतं सुषुवे सुतम्।
प्रभा प्रभातं सुषुवे त्वाष्ट्री संज्ञां तथा मनुम्।।
यमश्च यमुना चैव यमलौ तु बभूवतुः।। (मत्स्यपुराण - 11 / 2-4)

अर्थात् विवस्वान् कश्यप से अदिति में उत्पन्न हुए थे। उनके तीन पत्नियाँ थी - संज्ञा राज्ञी तथा प्रभा। रैवत की पुत्री राज्ञी थी, उसने रेवत नामक पुत्र को जन्म दिया। प्रभा ने प्रभात को जन्म दिया। त्वष्टा (विश्वकर्मा) की पुत्री संज्ञा ने मनु, यम तथा यमुना को जन्म दिया। इनमें यम तथा यमुना युग्म सन्तान थे।

विवस्वान् के ज्येष्ठ पुत्र मनु थे तथा कनिष्ठ पुत्र थे यम । मनु से सूर्यवंश को तथा यम से अग्निवंश को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। यम वंश शाखागत पीढी के प्रणेता के रूप में चौदह हुए, जिनका उल्लेख निम्नानुसार किया जा सकता हैः-

(1) धर्मराज (2) यम (3) मृत्यु (4) सर्वभूतक्षय (5) अन्तक (6) काल (7) वैवस्वत (8) व्रघ्न (9) परमेष्ठी (10) वृकोदर (11) नील (12) औदुम्बर (13) चित्र एवं (14) चित्रगुप्त।

धर्मराज के दस पत्नियाँ थी। इन दस पत्नियों से जो सन्तानें हुई, उनका विवरण अग्निपुराण में निम्नानुसार उपलब्ध होता है :-

''धर्मसर्गं प्रवक्ष्यामि दशपत्नीसु धर्मतः।
विश्वेदेवा स्तु विश्वायाः साध्याः साध्याद् व्यजायत।।
मरुत्वत्या मरुत्वन्तो वसोस्तु वसवोऽभवन्।
मनोस्तु मानवाः पुत्रा मुहूर्त्तास्तु मुहूर्त्तजाः।।
लम्बाया धर्मतो घोषो नागवीथी च यामिजा।
पृथिवीविषयं सर्वं त्वरुन्धत्यामजायत।।
संकल्पायास्तु संकल्पा इन्दोर्नक्षत्रतः सुताः।

अर्थात् अब मैं धर्मराज से उनकी दस पत्नियों के गर्भ से जो सन्तानें उत्पन्न हुई उस धर्म सर्ग का वर्णन करूँगा। विश्वा नाम वाली पत्नी से विश्वेदेव प्रकट हुए। साध्या ने साध्यों को जन्म दिया। मरुत्वती से मरुद्गण उत्पन्न हुए। वसु से वसुगण उत्पन्न हुए। भानुमती के पुत्र भानु हुए। मुहुर्त्ता से मुहुर्त नामक पुत्र हुए। लम्बा से घोष नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। यामि से नागवीथी नामक कन्या उत्पन्न हुई। पृथ्वी का सम्पूर्ण विषय (प्राणिवर्ग) अरुन्धती से उत्पन्न हुआ। संकल्पा के गर्भ से संकल्पों की सृष्टि हुई। इन्दु से नक्षत्ररूपी कन्यायें उत्पन्न हुई।

वसु से जो वसुगण उत्पन्न हुए थे, वे आठ थे। उनके नाम इस प्रकार कहे गये हैं:-

''आपो ध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ च नामत :।। (अग्निपुराण -18/35)

(1) आप (2) ध्रुव (3) सोम (4) धर (5)अनिल (6)अनल (7) प्रत्यूष एवं (8) प्रभास ये आठ वसुओं के नाम है। इनकी सन्ततियों का वर्णन अग्निपुराण में निम्नानुसार प्राप्त होता है:-

''आपस्य पुत्रो वैतण्ड्यः श्रमः शान्तो मुनिस्तथा।
ध्रुवस्य कालो लोकान्तो वर्चाः सोमस्य वै सुतः।।

धरस्य पुत्रो द्रविणो हुतहव्यवहस्तथा।
मनोहरायाः शिशिरः प्राणोऽर्यमणस्तथा।।
पुरोगवोऽनिलस्यासीदविज्ञातोऽनलस्य च।
अग्निपुत्रः कुमारश्च शरस्तम्बे व्यजायत।।
तस्य शाखो विशाखश्च नैगमेयश्च पृष्ठतः।
कृत्तिकातः कार्तिकेयो यतिः सनत्कुमारकः।।
प्रत्यूषाद्देवलो जज्ञे विश्वकर्मा प्रभासतः।'' (अग्निपुराण-18/36-40)

अर्थात् आप नामक वसु के चार पुत्र हुए- वैतण्ड्य, श्रम, शान्त एवं मुनि। ध्रुव नामक वसु का पुत्र काल था जो लोकों का अन्त करने वाला था। सोम नामक वसु का पुत्र वर्चा था। धर के प्रथम पुत्र का नाम द्रविण था। दूसरे पुत्र का नाम हुतहव्यवह, तीसरे पुत्र का नाम शिशिर, चौथे पुत्र का नाम प्राण तथा पाँचवें पुत्र का नाम रमण था। ये पाँचों पुत्र मनोहरा से उत्पन्न हुए थे। (कुछ ग्रंथों में धर का दूसरा नाम नल भी प्राप्त होता है। इस आधार पर सत्ययुग के प्रसिद्ध राजा नल का भी ग्रहण किया जाता है तथा उन्हे अग्निवंशीय माना जाता है) अनिल नामक वसु का पुत्र पुरोगव था तथा अनल नामक वसु का पुत्र अविज्ञात नाम वाला था। कुमार (स्कन्द) भी अग्नि का पुत्र कहा जाता है। वह सरकण्डों के समूह में उत्पन्न हुआ था। उसके पश्चात् शाख विशाख एवं नैगमेय ये तीन सन्तानें और उत्पन्न हुई। कृत्तिकाओं के पालन करने से स्कन्द कार्तिकेय कहा गया है। ये ही यति सनत्कुमार के रूप में अवतरित हुए। प्रत्यूष से देवल का तथा प्रभास से विश्वकर्मा का जन्म हुआ।

प्रत्यक्ष के दो पुत्रियाँ भी थी- कपिला एवं लोहिता।

उक्तवर्णित वसुओं में जो छठा वसु अनल नाम वाला था, उसे ही अग्नि कहा जाता था। तथा उसने ही पूर्वप्रचलित धर्मवंश को अग्निवंश के रूप में पुनः प्रतिष्ठापित करने का कार्य किया। इस अग्नि के तीन पत्नियाँ थी- द्युति, स्वाहा तथा स्वधा।

मत्स्यपुराण में द्युति का अपरनाम शिवा भी कहा गया है तथा अग्नि की पूर्वोक्त सन्ततियों के विषय में निम्नांकित उल्लेख प्राप्त होता है, जिससे आदि आग्नेय महा पुराणोक्त तथ्यों की भी प्रामाणिकता स्पष्ट हो जाती है-

''शिवा मनोजवं पुत्रमविज्ञातपतिं तथा।
अवाप चानलात्पुत्रावग्निप्रायगुणौ पुनः।।

अग्निपुत्रः कुमारस्तु शरस्तम्बे व्यजायत।
तस्य शाखो विशाखश्च नैगमेयश्च पृष्ठजाः।। (मत्स्यपुराण-5/25,26)

अर्थात् द्युति का अपर नाम शिवा था उसने अनल (अग्नि) से अग्नि जैसे ही गुणों से सम्पन्न दो पुत्र प्राप्त किये। पहला पुत्र मनोजव था (कुछ विद्वान् मनोजव का अर्थ कामदेव मानते हैं, जबकि कुछ विद्वान् जव का अर्थ गति होने से संशयास्पद मानते है। पाठान्तर में 'यति' शब्द भी मिलता है, जिससे अनुमान किया जा सकता है, कि अविज्ञात ने संन्यास ग्रहण किया हो। अग्नि का तीसरा पुत्र जो शिवा से उत्पन्न हुआ वह कुमार था जो सरकण्डों के समूह में उत्पन्न हुआ था। उसके बाद तीन और पुत्र हुए शाख, विशाख एवं नैगमेय।

कुछ स्थानों पर अविज्ञात के अन्य नाम अर्क का भी उल्लेख प्राप्त होता है। द्युति ने अग्नि से एक पुत्री को भी जन्म दिया था, जिसका नाम आग्नेयी था। आग्नेयी का विवाह स्वायम्भुव मनु की छठी पीढी में उत्पन्न मनु (द्वितीय) के पुत्र उरु के साथ किया गया था। उरु से उसे छः सन्तानें प्राप्त हुई थी, उनके नाम हैः- अङ्ग, सुमना, स्वाति, श्यतु, अंगिरा (द्वितीय) एवं गय।

अग्नि की दूसरी पत्नी स्वाहा थी, जिसकी सन्तानो के विषय में श्रीमद्भागवत महापुराण में निम्नांकित उल्लेख प्राप्त होता हैः-

''स्वाहाभिमानिनश्चाग्नेरात्मजाँस्त्रीनजीजनत्।
पावकं पवमानं च शुचिं च हुतभोजनम्।।
तेम्योऽग्नयः समभवँश्चत्वारिंशच्च पञ्च च।
त एवैकोनपञ्चाशत्साकं पितृपितामहैः।।'' (श्रीमदभागवत - 4/1/60,61)

अर्थात् स्वाहा ने अग्नि से तीन अभिमानी पुत्रों को उत्पन्न किया। ये थे - पावक, पवमान एवं शुचि। ये तीनों अग्नि के भोजन में से ही भोजन ग्रहण करने वाले थे। इनसे पैतालीस सन्तानें हुईं, जो परस्पर पिता पितामह के रूप में कुल उनचास मानी जाती हैं।

साम्ब पुराण के निम्नांकित उल्लेख से भी उक्त कथ्य की पुष्टि हो जाती हैः-

''अग्नीनां पुत्रपौत्राश्च चत्वारिंशन्नवैव तु।
मरुतामपि सर्वेषां विज्ञेयाः सप्तसप्तकाः ।। (साम्बपुराण - 18/34)

अर्थात् अगिन के पुत्र एवं पौत्र कुल मिलाकर उनचास थे। मरुद्गण भी उनचास थे, वे पहले सात हुए थे फिर उन सातों से एक एक से सात सात दूसरे उत्पन्न हुए,

कूर्मपुराण में भी इसी अनल (अग्नि) नामक वसु की सन्ततियों का वर्णन प्राप्त होता है, जो इन्ही तथ्यों की पुष्टि करता हैः-

''योऽसौ रुद्रात्मको वह्नि र्ब्रह्मणस्तनयो द्विजाः।
स्वाहा तस्मात्सुतान् लेभे त्रीनुदारान्महौजस :।।

पावकः पवमानश्च शुचिरग्निश्च ते त्रयः।
निर्मथ्य पवमानः स्यात् वैद्युतः पावकः स्मृतः।।

यश्चासौ तपते सूर्यः शुचिरग्निस्त्वसौ स्मृतः।
तेषां तु सन्ततावन्ये चत्वारिंशच्च पञ्च च ।।

पावकः पवमानश्च शुचिस्तेषां पिता च यः।
एते चैकोनपंचाशद् वह्नयः परिकीर्त्तिताः।।

सर्वे तपस्विनः प्रोक्ताः सर्वे यज्ञेषु भागिनः।
रुद्रात्मकाः स्मृताः सर्वे त्रिपुण्ड्रांकितमस्तकाः।।'' (कर्मपुराण-12/14-18)

उपर्युक्त उल्लेख में अग्नि को रौद्र स्वभाव वाला, पावक को वैद्युत् स्वभाव वाला, पवमान को निर्मन्थ स्वभाव वाला तथा शुचि को उष्ण स्वभाववाला कहा गया है। तथा जिन उनचास अग्निवंशियों का निर्देश किया है उनके विषय में लिखा है, कि ये सब तपस्वी थे, यज्ञों में भाग ग्रहण करने वाले थे, रुद्र के समान प्रभावशाली थे तथा मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड लगाया करते थे।

स्वाहा ने भी उपर्युक्त तीन पुत्रों के अतिरिक्त एक पुत्री को जन्म दिया था, जिसका नाम धिषणा था। धिषणा का विवाह सूर्यवंश में उत्पन्न राजा पृथु के पौत्र तथा अन्तर्धान के पुत्र हविर्धान के साथ किया गया था। उसने सूर्यवंश का विस्तार करने में महती भूमिका का निर्वाह किया।

अग्नि की तीसरी पत्नी स्वधा थी। स्वधा से पितरों का जन्म हुआ। इनसे अग्निवंश की एक अन्य पितृशाखा का उदय हुआ। साम्बपुराण में इनका उल्लेख निम्नानुसार प्राप्त होता है-

''एष संवत्सरो ह्यग्निः ऋतवस्तस्य जज्ञिरे।
ऋतुपुत्रार्त्तवाः पञ्च इति सर्गः सनातनः।। (साम्बपुराण-18/35)

अर्थात् संवत्सर अग्नि से स्वधा को पाँच पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। ये पाँच ऋतुएँ कहलाती है। इन पाँच ऋतुओं के पाँच पुत्र हुए जो आर्त्तव कहलाते हैं। इनकी सृष्टि सनातन है।

इस पाँच आर्त्तवों की जो सन्तानें हुईं, वे सब जितनी भी थीं, पिता पितामहादि सहित सब बाद में तीन भागों में विभक्त हो गयी- सौम्य शाखा, बर्हिषदशाखा तथा अग्निष्वात्त शाखा। जैसा कि साम्बपुराण के निम्नांकित उल्लेख से प्रमाणित होता हैः-

''आर्त्तवाः पितरो ज्ञेया ये जाता ऋतुसूनवः ।
पितामहास्तु ऋतवो मासा वै सोमसूनवः।।

प्रपितामहाश्च ऋतवः पश्चाद्वा ब्रह्मणः सुताः।
सौम्या बर्हिषदश्चैव अग्निष्वात्ताश्च ते त्रिधा।।'' (साम्बपुराण - 18/39,40)

पितृवंश में अग्निष्वात्त पितरों से एक मानसी कन्या का जन्म हुआ। उसका नाम अच्छोदा था। पितृवंश में ही उत्पन्न अमावसु के प्रति आसक्त होकर उसने विवाह की इच्छा व्यक्त की किन्तु सापिण्डय् के कारण अमावसु ने अस्वीकृति प्रकट की। यही अच्छोदा मानसिक व्यभिचार रूप पाप के कारण बाद में नदी के रूप में परिणत हो गयी जैसे सूर्यपुत्री यमुना हुई थी। मत्स्यपुराण में इसका विस्तृत उल्लेख चौदहवें अध्याय में प्राप्त होता हैः-

''अग्निष्वाता इति ख्याता यज्वानो यत्र संस्थिता।
अच्छोदा नाम तेषां तु मानसी कन्यका नदी।। (मतयपुराण -14/2)

अगिनष्वात्त पितरों की भाँति ही बर्हिषद नामक पितरों की कन्या पीवरी थी। यह भी मानस-पुत्री थी। इसका उल्लेख भी मत्स्यपुराण में हुआ है-

''विभ्राजा नाम चान्ये तु दिवि सन्ति सुवर्चसः।
लोका बर्हिषदो यत्र पितरः सन्ति सुव्रताः।।

महात्मानो महाभागा भक्तानामभयप्रदाः।
एतेषां पीवरी कन्या मानसी दिवि विश्रुता।।'' (मत्स्यपुराण - 15/1,5)

पुराणकार व्यास ने इस कन्याओं के तपश्चरण एवं भावी पुनर्जन्म के विषय में भी उल्लेख किये हैं, जो अग्निवंश की इस पितृवंश शाखा में पर्याप्त महत्व रखते है। मरीचिके ही तीसरे पितासंज्ञक पुत्र विवस्वान् थे। इनका वर्णन भी मत्स्यपुराण में निम्नानुसार हुआ हैः-

''मरीचिगर्भा नाम्ना तु लोका मार्त्तण्डमण्डले।
पितरो यत्र तिष्ठन्ति हविष्मन्तोऽङ्गिरस्सुता।।
तीर्थाटनमदा यान्ति ये च क्षत्रियसत्तमाः।
राज्ञां तु पितरस्ते वै स्वर्गमोक्षफलप्रदाः।। (मत्स्यपुराण -15/ 6,7)

यहाँ पुराणकार हविष्मन्त पितरों को क्षत्रिय शब्द से प्रतिपादित किया है, जिससे यह स्पष्ट लक्षित हो जाता है कि बाद में उत्पन्न होने वाले अग्निवंशीय क्षत्रियों जनक ये हविष्मन्त पितर ही है। इन पितरों की भी एक यशोदा नामक मानसपुत्री का वर्णन प्राप्त होता है, जो सूर्यवंशी राजा पंचजन की पुत्रवधू, राजा अंशुमान् की धर्मपत्नी, राजा दिलीप की माता तथा भागीरथ की पितामही थी-

''एतेषां मानसी कन्या यशोदा लोकविश्रुता।
पत्नी ह्यंशुमतः श्रेष्ठा स्नुषा पंचजनस्य च।।
जनन्यथ दिलीपस्य भगीरथपितामही।''

कर्दम नामक प्रजापति के लोक में रहने वाले आज्यपा नामक पितरों को वैश्य कहा गया है तथा उनकी भी एक 'विरजा' नामक मानसी कन्या का वर्णन प्राप्त होता है, जिसका विवाह राजा नहुष के साथ हुआ था। वह ययाति की माता थी। जैसा कि मत्स्य पुराण के ही निम्नांकित उल्लेख से प्रमाणित होता हैः-

''आज्यपा नाम लोकेषु कर्दमस्य प्रजापतेः।
पुलहाङ्गजदायादा वैश्यास्तान्मखयन्ति च ।।

एतेषां मानसी कन्या विरजा नाम विश्रुता।
या पत्नी नहुषस्यासीद् ययातेर्जननी तथा।। (मत्स्यपुराण - 15 / 20,21,23)

कर्मपुराण में स्वधा की मानुषी पुत्रियों के बारे में वर्णन प्राप्त होता है। वहाँ अग्निष्वात्त पितरों को अयज्वा तथा बर्हिषद् पितरों को यज्वा भी कहा गया है। इन दोनों प्रकार के पितरों से स्वधा ने दो पुत्रियों को जन्म दिया था - मेना तथा धरणी को। यह उल्लेख इसप्रकार हैः-

''अयज्वानश्च यज्वानः पितरो ब्रह्मणः स्मृता।
अग्निष्वात्ता बर्हिषदो द्विधा तेषां व्यवस्थिति।।
तेभ्यः सुतां स्वधा जज्ञे मेनां वै धरणीं तथा।
ते उभे ब्रह्मवादिन्यौ योगिन्यौ मुनिसत्तम।
असूत मेना मैनाकं क्रौञ्चं तस्यानुजौ तथा।।
गङ्गां हिमवतो जज्ञे सर्वलोकैकपावनीम्।।'' (सूर्यपुराण -12 / 14-21)

उपर्युक्त उल्लेखानुसार पितृवंशोत्पन्ना कन्या मेना तथा धरणी ये दोनों हिमवान् की पत्नियाँ थी । हिमवान् से मेना ने मैनाक तथा क्रौञ्च नामक पुत्रों को जन्म दिया। (पार्वती भी हिमवान् एवं मेना की पुत्री थी, जिसका विवाह शिव के साथ हुआ था।) धरणी ने गङ्गा नामक पुत्री की जन्म दिया, जो बाद में नदी के रूप में परिणत हुई तथा देवनदी के रूप में उसने प्रसिद्धि प्राप्त की।